ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

छायावादी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि जयशंकर प्रसाद

KEY WORDS:

डॉ. सुमन कुमारी

एसो.प्रो.(हिन्दी) राजकीय महाविद्यालय टनकपुर(चम्पावत)

प्रस्तावना—

द्विवेदी युग को इतिवृत्तात्मक एंव स्थूल भावाभिव्यंजक कविता के विरूद्व एक ऐसी कविता धारा प्रवाहित हुई, जिसमें प्राचीनता एक रूढ़िवादिता के विरूद्व विद्रोह का स्तर मुखरित था। जो अपनी रहस्यात्मक भावना, लाक्षणिक एंव प्रतिकात्मक पदावली, चित्रोपम भाशा, कोमल एंव रमणीय कल्पना आदि के कारण नूतन—युग का संदेश दे रही थी। जिसमें सामूहिकता के स्थान पर वैयक्तिकता, रूढ़िवादिता के स्थान पर स्वच्छन्दता, बौद्विकता के स्थान पर भावुकता, स्थुलता के साथ पर सूक्ष्मता, अभिव्यंजना शैली के स्थान पर प्रतिकात्मक शैली का प्रयोग किया गया था।

प्रारम्भ में ऐसी कविता को स्पश्ट,गूढ़ छायावादी एंव नीरस कहकर तिरस्कार की दृश्टि से देखा गया, लेकिन में पाठकों का दृश्टि को परिवर्तित हो गया। इस तरह स्वतन्त्र एंव वैयात्तक सूक्ष्मों भावों में सम्पृक्त, प्रकृति की रमणीय सुशमा से सुसज्जित, मानवता के प्रेम से ओत—पोत तथा लाक्षणिकता एंव प्रतिकात्मकता से परिपूर्ण कोमलकांत पदावली में जिस वनीन कविता धारा का विकास हुआ है। वही छायावादी काव्यधारा के नाम से अभिहित हुई।

सौन्दर्य भावना—

प्रत्येक छायावादी कवि विशय के प्रत्येक अवयव में अनन्त सौन्दर्य के दर्शन करता है। प्रसाद अंग्रेज कवि 'शैली' की ही भांति सौन्दर्य—प्रेमी कवि है। सौन्दर्य उनके काव्य का प्रधान आकर्शण है, प्रेम उनका प्रिय विशय है। प्रसाद जी की यह सौन्दर्य भावना विविध रूपों में व्यक्त हुई है। उन्हें सौन्दर्यमयी कृतियाँ रहस्य बनकर नाचती प्रतीत होती है। सभी स्थान पर अपनी 'मधुरिमा' में मौन रूप से एक—एक सोया हुआ संदेश सुनाई देता है—

"मधुरिमा में अपनी ही मीन,
एक सोया संदेा महान,
सजग हो करता था संकेत,
चेतना मचल उठी अनजान"

प्रसाद जी की सौन्दर्य—चित्रण प्रकृति और नारी पर अंवलम्बित है।'आंसू' में कवि ने नारी—सौन्दर्य का एक अति सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है—

"षषि मुख पर घूंघट डाले, अंचल में दीप छुपाए,
जीवन की गोधुली में, कौतूहल में तुम आए।।

श्रृंगरिकता—

द्विवेदी युग में श्रृंगार के प्रति जो तीव्र घृणा थी उसकी प्रतिक्रिया छायावादी युग में हुई और अधिकांश कवि श्रृंगारिक कविता करने में प्रवृत्त हुए, लेकिन श्रृंगार में वह स्थूलता नही थी।'कामायनी' में कवि ने श्रृद्वा का नखशिख वर्णन न करके, उसके सौन्दर्य का वर्णन किया है। अतः वे श्रृद्धा को नित्य जीवन की छवि में दीप्त, विश्व की करूण कामना—मूर्ति ज्योत्सना, निर्झर,हृदय की सौन्दर्य—प्रतिमा, वासना की मधुर छाया, पूर्णकाम की प्रतिमा आदि कहते है। प्रसाद जी की श्रृंगारिकता विशुद्ध प्रेम की प्रतीक है।'कामायनी' में प्रसाद जी ने रात्रि का एक नाचिका की भांति श्रृगारमय चित्रण किया है—

"जब कामना सिन्धु तट आई, ले संध्या का तारा दीप,
फाड़ सुनहरी साड़ी उसकी, तू हंसती क्यों अरी प्रतीप"

रहस्यवाद—

रहस्यभावना छायावादी काव्य की अपनी विशेशता है। रहस्यवाद के अन्तर्गत सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाली जिज्ञासा की भावना 'कामायनी' के 'आशा सर्ग' इस प्रकार मुखरित हुई है—

"हे अनंत रमणीय! कौन तुम?
यह मैं कैसे कह सकता,
कैसे हो? क्या हो? इसका तो
भार विचार न सह सकता"

स्वानुभूत सुख—दुख की निवृत्ति—

प्रसाद जी के स्वानुभूति विचार ही उनके काव्य में अंकित हुए है। 'आंसू' में कवि के अतृप्त प्रेम की ही करूण—धारा प्रभावित हुई है। प्रसाद जी ने लिखा है—

"रो—रोकर, सिसक कर कहता मैं करानी,
तुम सुमन नोंचते फिरते, करते जानी अनजानी"

प्रकृति पर चेतना का आरोप—

छायावादी कवि प्रकृति में एक सजीव सत्ता के दर्शन करते है। उन्हें प्रकृति मानव व्यापारी की तरह जड़ता से सर्वथा दूर चेतन व्यापारों से सम्पृक्त दिखाई देती है। इसी कारण वे प्रकृति में भी छास—विलास, रूदन, शोक—आनन्द, उल्लास आदि के चित्र अंकित किया करते है।

नरी की महत्ता—

छायावादी कवियों ने नारी के परम्परागत रूप में पूर्णतः परिवर्तन कर दिया है। उसे हृदय की समस्त सहानुभुति प्रदान की है। दिव्य ऐव आलौकिक सौन्दर्य प्रदान किया है। 'कामायनी' में नारी को दया, माया, ममता,त्याग,बलिदान,सेवा, समर्पण,अगाध विश्वास आदि से युक्त बताया गया है—

"इया,माया,ममता लो आज,
मधुरिया लो,अगाध विवास"

कामायनी की नारी श्रृद्धामयी है। वे जीवन के समतल में सतत् अमृत धारा बहाने में प्रयत्नशील है—

"नारी तुम केवल श्रृद्धा हो,
थ्व ष्वास रजत नग पग तल में"

मानवता की विपृत्ति—

छायावादी किव मानवता के पुजारी है। इसी कारण वे संकुचित राश्ट्र—प्रेम को अपनाकर समग्र विश्व में प्रेम करते हुए समस्त मानव को कल्याण—कामना करते है। प्रसाद जी ने मनु से कहलवाया है—

"बोले देखो कि यहां पर,
कोई भी नही पराया।
हम अन्य न और कुटुम्बी,
हम केवल एक हमी है"

अभिव्यंजना की अनूठी पद्वति—

छायावाद ने हिन्दी कविता के क्षेत्र में जिस अनूठी अभिव्यंजना पद्वति का प्रचर किया है। उसका चरमोत्कर्श प्रसाद के काव्य में दृश्टिगत होता है। उनके काव्य ने लाक्षणिकता की प्रवृत्ति भी दशनीय है—

"झंझा झकोर गर्जन था, बिजली सी नीरदमाला,
पकर भून्य क्षितिज को, सबने डेरा डाला"
प्रसाद जी की कविता अंलकारो से भी सजी हुई है।

मानवीकरण—

"सिंधु सेज पर धरा वधू अब,
तनिक संकुचित बैठी—सी"

उपसंहार—

इस प्रकार प्रसाद जी का काव्य का अवलोकन करने पर पता चलता है कि छायावाद की सम्पूर्ण विशेशताएं उनके काव्य में पूर्ण रूपेण दृश्टिगत है।

सहायक ग्रन्थ सूची—

1. कामायनी— डॉ0 जयांकर प्रसाद
2. छायावादी काव्य— महादेवी वर्मा
3. छायावादी काव्य निराला— सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला